om-13 final_Page 1 and 2 07-10-2014 20:59 Page 6

अचानक और एवररेडी

- ब्र.कु.जगदीशचन्द्र हसीजा

एक बहुत महत्वपूर्ण बात है कि जीवन में बिना साधना के सिद्धि नहीं होती। कई बार वाक्य छोटे होते हैं, शब्द थोड़े होते हैं लेकिन उनका महत्व बहुत होता है। अगर उनके बारे में सोचा जाये, चिन्तन किया जाये और व्यवहार में लाया जाये तो उनसे प्राप्ति और उपलब्धि अपार होती है। 'साधना के बिना सिद्धि नहीं होगी', यह बात तो सब जानते हैं, तभी तो सब साधना करते हैं लेकिन कई बार यह बात भूल जाती है और हम यह समझने लग जाते हैं कि 'साधनों के बिना सिद्धि नहीं होती'। फिर साधन इकट्ठे करने लग जाते हैं। धन और साधन-इन दोनों चीज़ों को इकट्ठा करने लग जाते हैं बगैर साधना के। जबकि बाबा कहते हैं कि योग की कमाई जमा करो, ईश्वरीय खज़ानों के भण्डार भरपूर करो लेकिन हम इनको भूलकर, धन और साधन इकट्ठे करने में लग जाते हैं।

आखिर इसका अर्थ क्या है?

जब यज्ञ स्थापित हुआ तब भी कहा जाता था कि 'समय बहुत कम है'। उसके दस साल बाद भी कहा जाता था कि 'समय बहुत कम है', बीस साल बाद भी कहा जाता था कि 'समय बहुत कम है'। पचास साल के बाद भी कहा जाता था कि 'समय बहुत कम है' और आज भी कहा जाता है कि 'समय बहुत कम है'। बात क्या है? आखिर इसका अर्थ क्या है? बाबा का एक ही महावाक्य अलग-अलग समय पर, अलग-अलग परिस्थितियों में अलग-अलग अर्थ देता है। आपने देखा होगा, शब्द एक ही होता है लेकिन सन्दर्भ और परिस्थिति के अनुसार उसका अर्थ बदल जाता है। इसमें कोई शक नहीं है कि समय बहुत ही कम है। जब मैं पहली बार यहाँ आया था, उस समय मुझे भी कहा गया था कि समय बहुत कम है। मेरे कुछ प्रश्न थे, मैं उनके विषय में पूछना चाहता था। पहले मुझे कुछ बहनों के साथ बिठाया गया। उनके उत्तरों से मैं संतुष्ट नहीं हुआ तो बाबा ने कहा, बच्चे, तुम मम्मा के साथ बैठो, वो ज्ञान-ज्ञानेश्वरी है, सरस्वती मैया है, मुख्य रूप से उसको ज्ञान का कलश मिला हुआ है। उसकी ज्ञान की लोरी मीठी है। तुम उनसे बात करो। बाबा ने मम्मा से कहा, मम्मा, इस बच्चे की बातें सुनना, यह क्या कहता है, आप जवाब देना। तब मैंने मम्मा से कहा था कि मम्मा, सृष्टि कितनी बड़ी है! जनसंख्या कितनी है! हम यह कहते हैं कि परमात्मा जब यज्ञ रचता है तो वह सब बच्चों को आमंत्रण देता है। कोई बाप अपने घर में उत्सव करे, तो उसका फर्ज़ बनता है कि सब बच्चों को बुलाये। उन दिनों बाबा यह कहते थे कि यह निमंत्रण सबको जाना है। इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय का निमंत्रण गाया हुआ है। उन दिनों कुछ ऐसे साक्षात्कार भी कराये गये थे कि जिनको निमंत्रण नहीं मिले थे, उनको निमंत्रण देने के लिए किसी रूप में स्वयं भगवान को जाना पड़ा था। ऐसा मुझे बताया गया था। उस बात का बड़ा विस्तार है, उस विषय में मैं नहीं जाता। भाव तो यह है कि मैंने उनसे कहा कि ऐसे साधन कहाँ हैं? जबकि इतना हमारा विरोध हो रहा है, तो हम कैसे सबको बुला सकते हैं? और समय तो बहुत कम है। उस समय भी समय कम था और अब भी कम है। उस समय तो हम समझते थे कि समय कम तो है लेकिन यह समझकर चलना चाहिए कि 'समय बहुत कम है'। हरेक को अपने व्यक्तिगत समय का तो पता नहीं है। फिर भी मेरा विवेक मुझे यही कहता था कि तीन-चार साल में कैसे भी करके इस दुनिया को संदेश मिल जायेगा और हम सब परमधाम चले जायेंगे। हम अपनी स्थिति को देखते थे, अपने संस्कारों को देखते थे। देवी-देवताओं की परिभाषा, उनकी व्याख्या हमें दी जाती थी कि वे सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पूर्ण... थे। उसे सुनकर भी हम अपने अन्दर झांकते थे, हम समझते थे कि इसमें मेहनत की ज़रूरत है और उसके लिए समय की ज़रूरत है। परंतु अब हम देखते हैं कि बाबा कहते हैं, समय बहुत कम है, जबकि इतने वैज्ञानिक साधन बन गये हैं जिनसे बहुत जल्दी से सारे संसार में संदेश पहुँचाया जा सकता है। मैं इतना इशारा देना चाहता हूं कि समय बहुत कम है। चाहे शब्दार्थ में, चाहे भावार्थ में, इसमें कोई संदेह नहीं है कि समय बहुत कम है।

कहते हैं यम और संयम दोनों की समानांतर स्थिति है, वो ऐसे कि यम को यामिनी के साथ जोड़ा जाता है और उस समय संयम रखना हथेली पर कपूर जलाने जैसा है। क्योंकि रात्रिकाल में मनुष्य का मन अंधकार मय होता है, वो असमंजस की स्थिति में होता है । सही निर्णय लेना बड़ा मुश्किल लगता है वहाँ, सब कुछ हम भगवान पर छोड़कर कहते अभी समय बहुत है और आनेवाले समय में आप कुछ न कुछ मार्ग तो दिखा ही देंगे। तब तक तो हम मौज मना लें , यही हम कर रहे हैं। सोच रहे हैं कि अभी रात तो बहुत लम्बी है, अभी सवेरा होने में समय है। अरे बंधु! समय ऐसे बीतेगा कि आपको पता नहीं चलेगा और यमराज आ जायेंगे अंतिम विदाई कराने .... अखियाँ खोलो .....।

कई बातें सत्य होते भी 'परंतु' शब्द उनके साथ लग जाता है। और कई ऐसी होती हैं कि ये तो निश्चित रूप से सत्य हैं। इनमें कोई संदेह की बात नहीं है। तो यह बात भी आप निश्चित रूप से मन में रखें कि समय बहुत कम है, लेकिन बहुत ही कम है। बाबा भी मुरलियों में बार-बार दोहरा रहे हैं कि बच्चे, अचानक सब कुछ होगा। बाबा बार-बार कह रहे हैं कि 'अचानक' होगा 'एवररेडी' रहो। पहले की अव्यक्त वाणियों को आप उठाकर देखो, तब भी बाबा कहते थे कि बच्चे, एवररेडी रहो। अब तो बाबा बार-बार दोहराकर कहते हैं। कई दफा कहते हैं कि मैं कह रहा हूं, बार-बार कह रहा हूं, कई दफा कह चुका हूं। इसके बाद यह नहीं कहना कि आपने कहा नहीं। यह बात अलग है कि कान खोलकर हमने सुना नहीं, हम जागे हुए नहीं थे, जब कहा गया था तब हम आधी नींद में थे। कई व्यक्ति ऐसे होते हैं, गाड़ी स्टेशन पर पहुँच जाती है तब तक सोये पड़े रहते हैं, उनसे कहो, स्टेशन आ गया, गाड़ी खड़ी है तो भी वे आधी नींद में होते हैं, सुनते नहीं हैं। जब तक उनके ऊपर के कम्बल को खींचो नहीं, वे उठते ही नहीं। कइयों को ऐसी नींद आ जाती है जो उनको उठाकर भी ले जाओ, उनको पता नहीं रहता कि मुझे कहाँ लेकर जा रहे हैं। -क्रमश:

एक ...''मनुष्य की आवश्यकता है''...! -पेज 2 का शेष...

नहीं बल्कि सर्वांगीण रूप हो, जिसका हृदय विशाल हो और जो वस्तुओं को एक ही पहलू से नहीं देखता हो, जो खुद के सिद्धांत के साथ समझौता न करता हो फिर भी साधारण समझ-शक्ति को तिलांजली देने वाला हो। ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता है जो आडम्बर के बदले सत्य को ज़्यादा पसंद करता हो और स्वयं की सत्यकीर्ति को अमूल्य भंडार समझता हो। जगत एक ऐसे प्रकार का 'मनुष्य' चाहता है, जो सर्व प्रकार से शिक्षित हो, जिसकी ज्ञान तंतुएँ अत्यंत चैतन्यमय हों, जिसका मस्तिष्क खिला हुआ हो, तीक्ष्ण, विशाल और गंभीर हो। जिसके हाथ कुशल हों, जिसकी आँखों में उत्साह हो, ज्ञान और गहराई में जाने की शक्ति चमक रही हो, जिसका हृदय कोमल, विशाल, उदार और सत्यनिष्ठ हो। समग्र विश्व एक ऐसे 'मनुष्य' की अपेक्षा कर रहा है।

आज भी बुज़ुर्ग खुद की संतानों को, स्नेही जनों को यशस्वी होने का, उज्ज्वल भविष्य का आशीर्वाद देते हैं। फिर भी मुख्य बात यह है कि जीवन में भूषण और शालीनता का, ऐसे भावनायुक्त इंसान बनने का आशीर्वाद भाग्य ही किसी को देता है। इसलिए आज ऊँचे शिखरों पर 'कौवे हैं लेकिन 'गुरु' नहीं! गिद्ध हैं, चील हैं, लेकिन 'जटायु' ढूंढने पर भी नहीं मिलता!

शिक्षा को हम वासनाओं की 'रिफाइनरी' कहते हैं, लेकिन शिक्षा मनुष्य को 'रिफाइन' करती है क्या? सभ्यता 'संस्कृति' का लक्ष्य नहीं बनती तो मनुष्य 'शिक्षित' होने से आगे की परितृप्ति में बौना साबित होता है।

गोवा-पणजी। माननीय मुख्यमंत्री मनोहर पारिकर को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ज्ञान चर्चा करते हुए ब्र.कु. शोभा। साथ हैं ब्र.कु. सुरेखा।

जगन्नाथपुरी। जगदगुरु शंकराचार्य स्वामी निश्चलानंद सरस्वती जी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. अनुपमा।

मिरजापुर। उ.प्र. के स्टेट मिनिस्टर कैलाश नाथ चौरसिया को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्रह्माकुमारी बहन।

गुरुसहायगंज-रामकृष्णनगर। थाना प्रभारी ओ.पी.एस. जी को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. नीलम।

जगन्नाथपुरी। गजपती महाराजा दिव्यसिंह देब को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु.अनुपमा तथा अन्य भाई बहनें।

जयपुर-वनी पार्क। राज. पुलिस एकेडमी में रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. लक्ष्मी तथा ब्र.कु. उमा।